Quadrant II - Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (T.Y.B.A)

Subject: Hindi

Paper Code: HND 105

Paper Title: 'भारतीय साहित्य'

Unit: Unit 1

Module Name: 'भारतीय साहित्य की अवधारणा एवं स्वरूप'

Module No: 1

Name of the Presenter: Mr. Salim Mohamed Gaded

Notes:

भारतीय साहित्य की अवधारणा

भारतीय साहित्य को जानने से पहले यह जानना ज़रूरी है कि आखिर भारतीय साहित्य किसे कहे ? सवाल मन में आ सकता है कि अगर हम व्यापक तौर पर बात करें तो क्या विदेशों में बसे भारतीयों द्वारा लिखा साहित्य भारतीय कहलाएगा ? या क्या इसे भारतीय कोटि में रखा जाएगा ? या क्या भारत में मौजूद गैर भारतीयों द्वारा लिखा साहित्य को भारतीय साहित्य की उपाधि दे सकते हैं ? ऐसे कई सारे प्रश्न भारतीय साहित्य को परिभाषित करने में उलझन पैदा करते हैं । पर एक नज़रिया स्थापित करने के लिए कहा गया कि भारत की कोई भी भाषा में लिखा साहित्य भारतीय साहित्य है । कालांतर में इसे पुष्ट

करने के लिए परिभाषाएँ भी दी गयी जो तर्क संगत भारतीय साहित्य की अवधारणा को स्पष्ट करती है । भारत का इतिहास बहुत पुराना है; साहित्यिक क्षेत्र में आदिकाल से विभिन्न भाषा ने अपना योगदान दिया है । इस दृष्टि से देखे तो हर युग का साहित्य महत्त्वपूर्ण है । हिन्दी साहित्य के इतिहास में हर युग और उसका साहित्य अपना स्थान ग्रहण किए हुए है जिसके बगैर इतिहास अधूरा जान पड़ेगा । उसी तरह हर भाषा के इतिहास में मूल तत्व समान है जो समग्र रूप से भारतीयता को लक्षित करता है । भारत में विभिन्न भाषा बोली जाती है, विभिन्न भाषा में साहित्य लिखा जाता है किन्तु वैचारिक आधार प्रत्येक साहित्य में एक ही है, भारत की संस्कृति भारत में बोली जाने वाली हर भाषा की धरोहर है । हाँ भाषाई भेद ज़रूर है पर स्रोत और उद्देश्य एक है ।

परिभाषाएं

भारतीय साहित्य की अवधारणा के निर्माण में योगदान करने वाले पहले प्रमुख चिंतन श्री अरविंद थी जिन्होंने भारतीय साहित्य का मूल स्वर आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि को माना । हिन्दी के अनेक विद्वान जैसे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी , डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. नगेंद्र आदि ने भारतीय साहित्य की परिभाषित करने का प्रयास किया है । डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं -

“ इस भारत में किसी भी भाषा में जो भी साहित्य रचा गया है, उस का विवेचन भारतीय साहित्य के अंतर्गत होना चाहिए। किसी भी भाषा के साहित्य का विवेचन अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य में ही करना उचित

है ... इसीलिए कि इस परिप्रेक्ष्य के बिना हम किसी एक भाषा के साहित्य का विवेचन कर ही नहीं सकते ।"

इस प्रकार समस्त भाषाओं में रचे जानेवाले साहित्यों के बीच एक सर्वनिष्ठता एक भारतीय साहित्य की अवधारणा को बल मिलता है । उपरोक्त अवधारणा को तर्कसंगत बताते हुए प्रो. भगवान सिंह लिखते हैं-

" हम पाश्चात्य शब्द का व्यवहार एक खास सांस्कृतिक विरासत, सोच और जहनियत वाले देशों के लिए करते हैं । कोई चीज़ है जो यूरोपीय चेतना को इस तरह निर्धारित करती है जिसके कारण हम भाषाओं का फर्क भूल कर पाश्चात्य साहित्य की बात करते हैं या यह मान कर चलते हैं कि अलग- अलग भाषाओं में रचा या साहित्य मिजाज के स्तर पर एक ही है । इस सब की प्राणधारा एक ही है । ठीक इसी अर्थ में और इतने ही औचित्य के साथ हम भारतीय साहित्य की बात कर सकते हैं ।"

"भारतीय साहित्य भारतीय जन गण की तरह विविधता और एकता के परस्पर सूत्रों में बुनी हुई एक सघन इकाई है । विभिन्न धाराओं व्यक्तित्वों और विचार सरणियों के लोक तांत्रिक अनुगुंफन से ही वह वजूद में आती है।"

डॉ. नगेंद्र भी भारतीय साहित्य के इस आशय का समर्थन करते हुए नज़र आते हैं । वे लिखते हैं - "इस अंत: साहित्यिक शोध प्रणाली के द्वारा अनेक लुप्त कड़ियाँ अनायास ही मिल जाएंगी, अगणित जिज्ञासाओं का सहज ही अंत हो जाएगा । साथ ही भारतीय चिंताधारा एवं रागात्मक चेनता की एकता का उदघाटन हो सकेगा ।"

कृष्ण कृपलानी ने लिखा है -“ भारतीय सभ्यता की तरह, भारतीय साहित्य का भी विकास, जो एक प्रकार से उसकी सटीक अभिव्यक्ति है, सामासिक रूप में हुआ है। इसमें अनेक युगों, प्रजातियों और धर्मों का प्रभाव परिलक्षित होता है और सांस्कृतिक चेतना तथा बौद्धिक विकास के विभिन्न स्तर मिलते हैं ।..... अंत्यन्त प्राचीन विकासक्रम के अतिरिक्त इसमें दो अन्य विशेषताएँ भी हैं, जो सम्पूर्ण भारतीय साहित्य को अपूर्व गौरव प्रदान करती हैं । एक है तीन हज़ार से अधिक वर्षों तक व्याप्त अखंड सृजन परंपरा और दूसरी है वर्तमान में जीवित अतीत की प्राणवन्त चेतना ।”

इन परिभाषाओं के आधार पर एक भारतीय साहित्य का अर्थ स्पष्ट हो जाता है कि भारत में भारतीय सभी भाषाओं में लिखा गया साहित्य ही भारतीय साहित्य है ।

भारतीय साहित्य का स्वरूप

यदि भारत एक राष्ट्र है, तो भारत में जो कुछ साहित्य चाहे किसी भी भाषा में लिखा जाता रहा है, वह भारतीय साहित्य है । इस देश की राष्ट्रीयता या भारतीयता कम से कम महाभारत के रचनाकाल से लेकर अब तक निरंतर विकसित हुआ है । उस राष्ट्रीयता का अस्तित्व महसूस कर, अपनी रचनाओं में दर्शाकर यहाँ के कवियों और रचनाकारों ने अहम भूमिका निभाई है ।

भले ही देश राजनीतिक कारणों से विभाजित रहा है , किन्तु सांस्कृतिक रूप से एक इकाई ही है । ‘ विष्णु पुराण’ में इस संदर्भ में कहा गया है

कि जो समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण में है, वह भारतवर्ष है, जहां के लोग भारतीय विद्या के संतान हैं । इस देश में बहुत से ऐसे लोग है जो भारतीय संस्कृति को संस्कृत ग्रंथों से जोड़कर देखते हैं और भारतीय साहित्य को संस्कृति से ! जो की गलत है । भारत में चार भाषाओं का परिवार है आर्य, द्रविड़, मुंडा और नाग किरात (चीनी तिब्बती) । इन चारों भाषाओं में लिखा गया साहित्य । चाहे शिष्ट साहित्य हो या लोक साहित्य सभी को भारतीय साहित्य की उपाधि देनी चाहिए ।

भारतीय साहित्य की बात करने का अर्थ भारतीय भाषाओं के अलग-अलग साहित्यों जैसे तमिल, गुजराती, बंगला आदि के स्वतंत्र अस्तित्व का निषेध करना नहीं है । बल्कि उनके स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकारने और उसका सम्मान करते हुये उनमें निहित उस एकसूत्रता की तलाश है । जिसके आधार पर भारत की किसी भी भाषा में रचित साहित्य विदेश या पश्चिम के किसी साहित्य से अलग हो जाता है । यही भारतीय साहित्य की पहचान है ।

भारतीय साहित्य को ठीक तरह से समझने के लिए इसकी एकता और अखंडता को ठीक तरह से समझना ज़रूरी है । भारत अनेक भाषाओं वाला विशाल देश है । उत्तर पश्चिम में पंजाबी, हिन्दी और उर्दू, मध्य पश्चिम में मराठी और गुजराती दक्षिण में तमिल, तेलुगु, कन्नड और मलयालम के अलावा कश्मीरी, कोंकणी, सिंधी, डोंगरी आदि भाषा भी अपना महत्त्व रखती है ।

भारतीय संविधान में शामिल हर भाषा में विपुल साहित्य रचा गया है । और इस साहित्य का अपना प्रखर वैशिष्ठ्य है । हिन्दी, उर्दू पंजाबी

सिंधी की सीमाएं कितनी भी मिली हुयी क्यों न हो उनके विशेषताएँ सुरक्षित है ।

साहित्य का यह अंतर दरअसल संस्कृतियों एवं रीति-रिवाज, खानपान, लोकाचार के बाद भी हमारी भारतीयता का मूल एक ही है । भारत में विभिन्न धर्म के लोग रहते हैं तो इसी आधार पर रीति-रिवाज़ों में अनेकता के लक्षण दिखाई देना सामान्य है । पर कोई यह रीति रिवाज केवल एक क्षेत्र या भाषा तक सीमित नहीं है । भारतीय साहित्य के कारण इसे हर व्यक्ति जानता है । उदाहरण के तौर पर केरल का पहनावा गोवा के लोगों को तो उसी तरह पंजाब के लोगों को भी पता है । यदि भारतीय साहित्य जैसा को स्वरूप न होता तो इन बातों से हम बेखबर रह जाते । हर व्यक्ति हर प्रदेश की संस्कृति को किसी एक प्रदेश में बैठकर नहीं जान सकता और यहाँ साहित्य काम आता है ; जिससे वह अपने संस्कृति और दूसरी संस्कृति के बीच समानता और खूबियों को समझने का प्रयास करता है जिससे वह अनायास ही अपने ज्ञान की वृद्धि कर अपने ज्ञान को दूसरों तक पहुंचता है । जिससे संस्कृति का आदान प्रदान होता है । अतः भारतीय साहित्य हमें सहूलियत देता है कि हम भेदभाव को मिटाकर अखंड हो ।

भारतीय साहित्य और अनुवाद

भारतीय साहित्य के फलने में अनुवाद ने सबसे अहम भूमिका निभाई है । जब साहित्य अकादमी और भारतीय ज्ञानपीठ की शुरुआत हुई तब

से भारत के प्रत्येक भाषा के प्रसिद्ध साहित्य का अनुवाद जारी है । जिससे पाठक को विभिन्न भाषाओं में लिखित अद्वितीय रचनाओं को पढ़ने का मौका मिलता रहा है । यदि किसी अन्य भाषा के साहित्य का हिन्दी में अनुवाद नहीं होता या हिन्दी के महान ग्रन्थों का अनुवाद किसी लक्ष्य भाषा में नहीं होता तो पश्चिम का साहित्य पूर्व के खूबियों से अपरिचित रहता और उत्तर; दक्षिण के अध्यात्मिक चिंतन से ! यदि रवीन्द्रनाथ टेगोर के उपन्यास 'गोरा' का हिन्दी में अनुवाद नहीं होता तो हिन्दी पाठक अंत्यन्त अलंकृत कृति से विमुख रहता । यदि कुसमाग्रज की मराठी कविता हिन्दी पाठक तक नहीं पहुँचती तो हिन्दी में कभी कुसमाग्रज प्रसिद्ध नहीं होते । भारत का साहित्यकार एक से अधिक भाषा में साहित्य लिखता रहा है । यह एक वजह है जिससे साहित्यिक आदान प्रदान अनुवाद और तुलनात्मक अध्ययन के कारण संभव हो पाया है । भारतीय साहित्य के अनुवाद का अर्थ, भारत की विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य के सभी विधाओं के पाठ का अनुवाद है । यदि अनूदित पाठ में स्रोत भाषा के पाठ का अर्थ न हो और यदि प्रभाव की दृष्टि से वह मूल के निकट तथा अनुरूप हो तो अनूदित पाठ भी मौलिक पाठ की ही तरह पाठकों को आकर्षित करेगा । रवीन्द्रनाथ ठाकुर को उन्हीं के द्वारा बांग्ला से अंग्रेज़ी में अनूदित 'गीतांजलि' के पाठ के लिए 'नोबल पुरस्कार' (1913) प्राप्त हुआ था। अनुवाद की शक्ति अजेय होती है । भारतीय साहित्य में कुछ कालजयी कृतियों के अनूदित संस्करण मूल कृति का विश्वास दिलाती हैं । जैसे शरतचंद्र कृत देवदास, चरित्रहीन और श्रीकांत, बिराजबहू, बंकिमचन्द्र का आनंदमठ, रवीन्द्रनाथ ठाकुर का गोरा और महाश्वेता देवी कृत जंगल

के दावेदार आदि कृतियों के अनूदित पाठ प्रामाणिक अनुवाद के उदाहरण हैं। जिससे भारतीय साहित्य और विकसित हुआ है ।